thearyasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई.

ओ३म्

उद् ज्योतिः चक्रथु आर्याय — ओ३म् — आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : ११६ ● अंक : १५-१६ ● २२ एवं २६ अप्रैल २०१४ वैशाख कृ.अष्टमी व व वैशाख कृ. ३० सम्वत् २०७१ ● दयानन्दाब्द १६० वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११५

ऋषि दयानन्द की शिक्षा नीति

यह एक निर्विवाद सत्य है कि शिक्षा का उद्देश्य शिशु में अन्तर्निहित गुण, शक्ति व प्रतिभा का सर्वांगीण विकास करना है। शिक्षा का उद्देश्य जानने से पहले मानव जीवन का उद्देश्य जानना बहुत जरूरी है। भौतिकवादी दार्शनिक चिन्तक व मनीषी हर प्रकार की सुख सुविधा की प्राप्ति संचय व उपभोग को जीवन का लक्ष्य मानते है। परंतु हर सुख प्राप्त कर मनुष्य क्या करें?क्यों करें?इस जीवन का चरम लक्ष्य क्या है?इन प्रश्नों के प्रति वह मौन है।

परंतु वैदिक ऋषि जन्म से पहले व मृत्यु के पश्चात् भी आत्मा का अस्तित्व मानकर आत्मिक उन्नति को मनुष्य जीवन का परम उद्देश्य मानते है।

ऋषि दयानन्द यजुर्वेद भाष्य करते हुए लिखते है-

मनुष्यैर्द्वाभ्यां प्रयोजनाभ्यां प्रयतितव्यं।
एकमत्यन्तं पुरुषार्थं शरीरारोग्याभ्याम चक्रवर्ती राज्यश्री प्राप्ति करणम्।
द्वितीय सर्वविद्याः सम्यक् पठित्वा तासां प्रचारकरणम्।।

अर्थात मनुष्यों को दो प्रयोजनों से प्रवृत्त होना चाहिए। एक तो अत्यन्त पुरुषार्थ और शरीर की अरोग्यता से चक्रवर्ती राज्य लक्ष्मी प्राप्त करना दूसरे सब विद्याओं को अच्छी प्रकार पढ़कर उनका प्रचार करना।

महर्षि पतंजलि योगदर्शन में मानव जीवन में धर्म की उपयोगिता का वर्णन इस प्रकार है- यतोऽभ्युदयनिश्रेयस् सिद्धिः स धर्मः जिससे इहलोक भौतिक उन्नति सुख समृद्धि आरोग्य, यश, बल तथा पारलौकिक सुख परमानन्द की प्राप्ति हो, वह धर्म कहलाता है। स्वामी दयानन्द मनुष्य के लिए अनिवार्यतम पांच कर्मों में सर्वप्रथम ब्रह्मयज्ञ। संध्या के प्रथममंत्रा में परमेश्वर से इस प्रकार प्रार्थना करते है-

शन्नो देवीरभिष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रयन्तु नः। हे परमात्मा हम पर सांसारिक सुखों और पारलौकिक सुखों की वर्षा करो। पुनः संध्या के समर्पण मंत्र में प्रातः सायं पुरूषार्थचतुष्टय धर्म अर्थ काम और मोक्ष की प्राप्ति की प्रार्थना करके जीवन का चरम लक्ष्य मोक्ष की सिद्धि मानते है। स्वामी दयानन्द आर्य समाज के छठें नियम में विधान करते हैं ''संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

भौतिक एवं आत्मिक उत्थान का साधन है शिक्षा। स्वामी दयानन्द 'स्वमन्तव्यप्रकाश' में लिखते हैं जिसमें विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रिता की बढ़ती होवे तथा अविद्या आदि दोष छूटे, उसको शिक्षा कहते है। स्वामी दयानन्द की मूल मान्यताओं, सिद्धान्तों, लक्ष्यों के वृत का केन्द्रबिन्दु वेदाधारित सुशिक्षा है तथा वृत्तान्त शिक्षा पूरी करके, सकल विद्याओं को जानकर प्रेम, करूणा, बन्धुत्व, सेवा, साधना, समर्पण समाज कल्याण जैसे उदात्त गुणों को धारण करके मोक्ष एवं परमानन्द की प्राप्ति करने पर पूर्ण होता है।

शिक्षा का उद्देश्य- भौतिकवादी आचार्य शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व के गुणों का विकास तथा उत्तम खान पान वस्त्राभूषण, भवन, लौकिक सुविधाएं प्राप्त करवाने के लिए मास्टर, क्लर्क, पटवारी, आई.ए. एस. आई.पी.एस. वकील, डाक्टर, व्यवसायी आदि बन कर सुखी जीवन पढ़ाई का उद्देश्य मानते है। कुछ विचारक अच्छे नागरिक तैयार करना शिक्षा का उद्देश्य मानते हैं। परंतु वैदिक ऋषि शिक्षा का उद्देश्य ''पुरूषार्थ चतुष्टय'' की प्राप्ति मानते है। ऋषि दयानन्द अपने लघु ग्रंथ 'व्यवहारभानु' में लिखते है- ''सा विद्या या विमुक्तये'' ''अर्थात् विद्या/शिक्षा वह है जो मनुष्य को हर प्रकार के अज्ञान, अन्याय और अभाव के बन्धन से मुक्त कर मोक्ष को प्राप्त कराए'' अतः मनुष्य जीवन की पूर्णता के लिए शिक्षा का मुख्य उद्देश्य शारीरिक आरोग्यता, आत्मिक विकास एवं सामाजिक उन्नति है। वैदिक ऋषि समाज में व्याप्त अज्ञान, अन्याय और अभाव को समाप्त कर अच्छे समाज की रचना के लिए शिशुओं को मानव और देव बनाना चाहते हैं।

आर्य समाज के आठवें नियम में ऋषि ने कहा है कि ''अविद्या का नाश एवं विद्या की वृद्धि करनी चाहिए''। सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिखा है ''सन्तानों की उत्तम शिक्षा, विद्या, गुण, कर्म, स्वाभावरूप आभूषणों का धारण करना, माता पिता व आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है''।

ऋषि की शिक्षा नीति के आधारस्तम्भ तीन रूपया मासिक वाले बाड़े (सरकारी स्कूल) में भर्ती करना अथवा लाखों रूपये फीस वाले पंचतारा पब्लिक स्कूल में अक्षर ज्ञान करवाना मात्र न होकर शिक्षा माता के गर्भधारण से पूर्व शिशु के लिए तैयारी से प्रारम्भ होती है।

शिक्षा को शिशु की गर्भस्थ अवस्था से ही महत्व देते हुए आचार्य दयानन्द कहते है कि शिशु की देख-रेख गर्भाधान से होनी चाहिए, क्योंकि इस काल में भौतिक शरीर का निर्माण एवं मानसिक संस्कार डाले जाते है। जरा सी असावधानी महती हानि का कारण हो सकती है। अतः उस काल में ''माता की प्रसन्नता शोकरहित विचरण का परिवेश आवश्यक है। इसी परम्परा में मानव जीवन के लिए नियत संस्कारों में दो ''पुंसवन एवं सीमान्तोन्नयन संस्कार'' जन्म से पूर्व होने जरूरी है।

तत्पश्चात् ऋषिवर मां की गोद में शिक्षा की योजना देते हुए लिखते है ''जितना माता से सन्तानों को उपदेश एवं उपकार पहुँचता है, उतना किसी अन्य से नहीं, धन्य है वह माता जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो, तबतक कुशलता से उसे उपदेश करें। अतएव ऋषिवर कहते है ''जब (शिशु) बोलने लगे तब उसकी माता बालक की जिह्वा जिस प्रकार कोमल उच्चारण कर सके वैसा उपाय करें। जिससे वर्णस्थान, प्रयत्न शुद्ध हो अर्थात् जैसे 'प' उसका ओष्ठ स्थान और स्पष्ट प्रयत्न दोनों होठों को मिलाकर बोलना, ह्रस्व दीर्घ प्लुत अक्षरों को ठीक ठीक बोलना''। इस प्रकार ऋषि माँ की लोरियों के साथ उच्चारण की शिक्षा व्यवस्था देते है, ताकि उच्चारण आदि निर्दोष हो एवं इसी के फलस्वरूप अनिवार्य नारी शिक्षा की महत्ता भी दर्शाते हैं।

दूसरे समुल्लास में माताओं को आगे निर्देश देते है ''जब शिशु

शेष पेज.....४ पर

वेदामृतम्

ओ३म् तयोरिदवसावयं, सनेम निचधीमहि
स्वादुत प्रेरेचनम्। ऋग् १.१७.६

अर्थ-(तयो) उन (इन्द्र और वरूण) के (अवसा) रक्षण से (इत्) ही (वयं) हम (सनेम) धन कमायें। (निधीमहि च) और निधि से संग्रह करें। (उत्) और (प्रेरेचनम्) रिक्तीकरण (भी) (स्यात्) होता रहे।

भावार्थ-हम चाहते है कि हम इन्द्र व वरूण के संरक्षण में रहें। इन्द्र ऐश्वर्य शालिता के प्रतीक हैं हम भी उन्हीं के अनुसार ऐश्वर्य शाली हों। सन्मार्ग पर चलते हुये धन कमाने में जुटें। निर्धनता अभिशाप है उससे मुक्ति पाना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है। अतः हमें चाहिए हम इन्द्र के आदर्शो का अनुसरण करते हुये प्रभूत धन संचय करें। धन की निधि के स्वामी हों। इन्द्र के साथ ही हम वरूण को भी समझें वरूण पाशी है अनृत भाषी अनृताचारी को अपने पाशों में बांधकर दण्डित करता है। अतः हम कुमार्ग पर न चलें। वरूण दीन दुखियों की रक्षा करता है हम भी अपने संचित ऐश्वर्य से दीप जनों की सहायता करें सत्यायों को दान दें। हम निधि को कमाकर खूब भरें परन्तु उसे दीन दुखियों की सहायतार्थ लोक हित में खाली भी करते रहें। दान करते रहें।

डॉ.रामनाथ वेदालंकार

आचार्य स्वदेश
प्रधान/संरक्षक

भुवन तिवारी
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

विद्यालयों को शिक्षा मन्दिर ही रहने दें व्यापार केन्द्र न बनायें

परमात्मा ने जीवात्माओं को उनके कर्मानुसार अनेकों प्रकार के शरीर दिये हैं। उन शरीरों में ही एक शरीर मानव का है। मानव शरीरधारी जीवात्मा को परमात्मा ने कर्म करने की स्वतंत्रता दी है परंतु कर्म फल देना अपने हाथ में रखा है। कर्म विकर्म का ज्ञान प्राप्त करने के लिए माता पिता की गोद और गुरूजनों का सानिध्य दिया है। बालक की शिक्षा 5 वर्ष तक मां देती है 7 वर्ष तक पिता उस बालक का शिक्षक होता है 7 वर्ष के बाद शिक्षा का दायित्व गुरू निभाते थे। गुरू की शिक्षा स्थली का नाम ही गुरूकुल विद्यालय या शिक्षा मन्दिर होते थे। जहां से एक से एक विद्वान मनीषी विविध विषयों के पारंगत स्नातक बनते थे जो अपने अपने अधीत विषय के क्षेत्र में अपने दायित्व का निर्वहण करते थे। हमारे देश में अनेक प्रकार के आयुध शस्त्रास्त्र, वायुयान, जलयान, थलयान प्रचुर मात्रा में बनते थे।

गुरूजन विद्यार्थी को अपने निकट बिना किसी जातीय वर्गीय भेद के बिना अमीर गरीब के भेद के शिक्षा के लिए लेते थे। वहां सभी का खानपान एक ही स्तर का रहता था, परिधान भी सभी का एक सा ही होता था। सभी में अनुशासन स्थापना व चरित्र निर्माण की बौद्धिक योग्यता व क्षमता के आधार पर गुरूजन उसके योग्य शिक्षा प्रदान करते थे। स्नातक बनकर फिर वे अपनी अपनी शिक्षा के अनुरूप अपने कामो के द्वारा राष्ट्रोत्थान में सतत संलग्न रहते थे।

महाभारत काल से शिक्षा में गिरावट आने लगी जब राजघरानों में गुरूजन वेतनभोगी बनकर पढ़ाने जाने लगे। उस गिरावट का ही परिणाम हुआ हम विदेशियों के गुलाम बने। हमारे राष्ट्र का सारा वैभव विदेशी लूटने लगे। व्यापारी बनकर आने वाली ईस्ट इंडिया कम्पनी के रूप में अंग्रेजों ने भी खूब लूटपाट की और सताया व अपनी धूर्त वृत्ति के द्वारा हमें सदैव गुलाम रखने के लिए हमारे देश की पूरी शिक्षा व्यवस्था ही बदल डाली। लार्ड मैकाले द्वारा बनाई गयी शिक्षा व्यवस्था लागू कर दी गयी जिससे केवल रोजी रोटी कमाने तक की व्यक्ति सिमट कर रहता है।

पराधीन भारत में महर्षि दयानन्द सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ जिन्होंने देश की पराधीनता के मूल में नारी की प्रताड़ना शिक्षा का आभाव ऊँच नीच के भाव को पाया फलतः उससे छुड़ाकर स्वतंत्र राष्ट्र बनाने की भावना से आर्यसमाज आन्दोलन चलाया, शिक्षा व्यवस्था बदलने पर जोर डाला। अनेको बालक बालिकाओं के लिए गुरूकुलों व कन्या विद्यालयों की स्थापना की गयी। जिसमें पढ़कर स्नातक स्नातिक आर्यो ने स्वराज्य आन्दोलन में भाग लेकर देश को स्वतंत्र कराया। परन्तु आजादी के बाद जिन नेताओं ने सत्ता ग्रहण की उन्होंने भौतिक समृद्धि में अपना ध्यान केन्द्रित कर लिया। शिक्षा व्यवस्था वही गुलाम रखने वाली ही रखी। गरीब और अमीरों की शिक्षा हेतु अलग अलग विद्यालय व केन्द्रीय विद्यालय बनने आरम्भ हुये। केन्द्रीय विद्यालयों के उत्तीर्ण छात्र ऊँचे पदों पर पहुँचने लगे। अनुशासन स्थापना व चरित्र निर्माण के भाव तिरोहित होने लगे। राजकीय सहायता प्राप्त व बिना राजकीय सहायता के विद्यालय बनने लगे। राजकीय सहायता प्राप्त विद्यालयों का स्तर गिरने लगा। असहायिक स्कूलों में बच्चों को पढ़ाने के लिए भर्ती कराने की भावना प्रबल होने लगी। असहायिक विद्यालयों के संस्थापको ने छात्र छात्राओं की बढ़ती संख्या से उत्साहित होकर विद्यालयों के शिक्षा स्तर की प्रतिस्पर्धा के नाम पर नये नये प्रकाशकों की नई नई पुस्तकें लगाना प्रारम्भ किया। प्रतिवर्ष पुस्तकें बदलने लगे। एकरूपता की भावना से अपने अपने विद्यालयों के वेश निर्धारित करने लगे।

पुस्तकों के प्रकाशकों से उनकी पुस्तकें लगाने के नाम पर उन्हें अच्छा सा कमीशन मिलने लगा, वेश के विक्रय से वस्त्र विक्रेता से कमीशन मिलने लगा और धन अर्जन का लोभ बढ़ा और पुस्तकें व वेश अपने द्वारा निर्दिष्ट स्थान से ही खरीदने का आदेश प्रसारित किया जाने लगा। फलतः बच्चों के अभिभावकों पर असीमित धन व्यय का बोझ। छात्र छात्राओं पर पुस्तकों का अनावश्यक बोझ बढ़ने लगा। पढ़ाई की भावना गौण होने लगी। कमाई मुख्य भावना बनने लगी। पढ़ाई का स्तर गिरने लगा बच्चों में उच्छृंखलता उद्दंडता चरित्र हीनता बढ़ने लगी।

देश के सभी प्रबुद्ध नागरिकों द्वारा देश की गिरती अवस्था पर गंभीरता से चिन्तन की अपेक्षा है। शिक्षा के स्तर में सुधार के लिए पुस्तकों का बोझ कम करने फीस सभी विद्यालयों में एक समान ही न्यूनतम रखने सुयोग्य शिक्षकों के चयन एवं छात्रों में विषय के अध्ययन की प्रवृत्ति बढ़ाने नैतिक शिक्षा को आवश्यक विषय के रूप में पढ़ाना होगा। विद्यालयों के प्रबन्धकों पर सरकार को शिक्षा के स्तर के बढ़ाने के आधार पर उन्हें पुरस्कृत करने की व्यवस्था भी की जा सकती है। प्रबन्धकों को अपने पूर्वजों की मान मर्यादा की रक्षा के लिए विद्यालयों को धनार्जन का केन्द्र नहीं बल्कि शिक्षा का मन्दिर बनाने का संकल्प लेना होगा। ऐसा सब होने पर शिक्षा स्तर सुधरेगा और हमारा देश विश्व में सम्मान पाने का अधिकार प्राप्त कर सकेगा।

-सम्पादक

धर्म और मानव

वेद मंत्र प्रेरणा देते है कि मानव को अपना जीवन ऊँचा अनाने के लिए प्रयास करना चाहिए। यह मानव का धर्म है। धर्म बाहर से धारण नहीं किया जाता यह इन्द्रियों में स्वतः निहित रहता है। चक्षु इन्द्रिय का धर्म है देखना। इससे वह सुन्दर दृश्य देखता है। घ्राणेन्द्रिय का धर्म है सुगन्ध ग्रहण करना। कर्णेन्द्रिय का धर्म है शब्दों को सुनना। अभद्रभाषण से घृणा करना। रसना का धर्म है षड्रसों का स्वाद लेना। त्वचा का धर्म है शीतोष्ण वायु का स्पर्श करना। कर्तव्य का पालन करना मानव धर्म है। ब्रह्मचारी आश्रम में प्रातः होने वाले यज्ञ में आचार्य के पास ''समित्याणिः'' जाता है अर्थात् समिधा हाथ में लेकर यज्ञशाला में प्रवेश करता है यह उसका कर्तव्यधर्म होता है। अपने कर्तव्यकर्म से उसमें शक्ति उत्पन्न होती है। जीवन में पवित्रता आती है। परोपकार भावना का उदय होता है। उसमें विवेक जागता है। ब्रह्मचारी के समित्पाणि होने से वायुमण्डल पवित्र रहता है, सुगन्धित बनता है। मानव हृदय में विचारों की सुगन्धी का प्रसार होता है। उसकी वैचारिक सुगन्धि के प्रसार से मानव समाज ऐसे सुगन्धित होता है जैसे वनस्पतियों की पुष्पगन्ध से सारा वातावरण सुगन्धित रहता है। वहां कोई रोग उत्पन्न नहीं होता।

एक बार मनुवंश के राजा जालवी से महर्षि गौतम के पिता ने पूछा-भगवन् आप कितनी समिधाओं से यज्ञ करते है। महराजा जालवी ने कहा- महर्षे मैं ज्ञान-कर्म उपासना रूपी तीन समिधाओं से यज्ञ करता हूँ। ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य भी मेरी समिधाएं है- मैं इन सबसे भी यज्ञ करता हूँ। इसी से राष्ट्र में कर्तव्य धर्म की उच्चता रहती है। ये समिधाएं मेरे अन्नाधान का कारण है, आधार है। मेरे हृदय में सत्व-रज-तम भी मेरे अन्नाधान की समिधाएं हैं। इन्हीं से प्रजा को एक समान सुगन्धित रखना मेरा धर्म हैं।

प्रातःकालीन ब्रह्मचिन्तन करना ब्रह्मयज्ञ कहलाता है। उसी के साथ देवपूजा (हवन करना) और अतिथि सेवा करना प्रत्येक घर समिधा हैं। इसी से वाह्य तथा अन्तराग्नि प्रदीप्त रहती है। ब्रह्मचिन्तन करने वाले माता पिता की सन्तान बुद्धिमान होती है। देवपूजक का घर सदा सुगन्धित रहता है। उनके हृदय में श्रद्धा बहती है। वह परोपकार की नदी है जिसमें स्नान करना प्रत्येक गृहस्थ का मूलधर्म होता है। वे भिखारी नहीं होते है। दान करना उनका महान पवित्र धर्म है। उनके विचारों की सुगन्धी से देव सदा प्रसन्न रहते है। अतिवृष्टि अनावृष्टि का नाम वहां सुनने को नहीं मिलता। उनकी आत्मा में इतना बल आ जाता है कि वहां कोई सन्तानहीन नहीं रहता। उनकी सन्तान अल्पायु में शरीर नहीं छोड़ती। साकल्य समिधा-घृत में लगा उनका द्रव्य कभी समाप्त नहीं होता उस घर को वह द्रव्य कभी नहीं छोड़ता। दुरूपयोग (सल्फा, शराब) में लगा द्रव्य उस घर से सदा के लिए दूर चला जाता है फिर वापिस नहीं आता। स्वाहा के साथ अपने दुर्गुणो को यज्ञाग्नि में समर्पित कर देने वाले गृहस्थी यजमान ब्रह्मज्ञानी बन जाते है। उन ईश्वर भक्तों के घर में लक्ष्मी का सदा वास बना रहता है। विद्वान अतिथि सदा उस घर की शोभा बढ़ाते है। वे अतिथि विद्वान उनकी सेवा से प्रसन्न रहते है। प्रसन्न हुआ अतिथि वहां अपने पुण्य देकर ही प्रस्थान करता है। उस विद्वान अतिथि की वाणी से वह गृहस्थ पवित्र हो जाता है। उस गृहस्थ की आत्मा ब्रह्म की ओर बहने लगती है।

वह पितृयज्ञ का भी पारखी हो जाता है। पितृ सेवा उसके हृदय की शोभा होती है। देवयज्ञ में लगे विश्वधर्म के ये पुजारी वैदिक राष्ट्रधर्म की मर्यादा से कभी दूर नहीं रहते। ऋषि मुनिधर्म के पुजारी बन अपने जीवन धर्म से समाज के उत्थान में लगे रहते है। समाज का वायुमण्डल इनसे पवित्र बना रहता है।

ऐसे मानव कभी धर्मनिरपेक्ष नहीं होते है। संसार का कोई राष्ट्र या प्राणी धर्मनिरपेक्ष नहीं है। पशु पक्षी भी धर्म निरपेक्ष नहीं होते। मछलियां धर्म निरपेक्ष हो जाये तो समुद्र के जल को निर्मल कौन करेगा?वृक्ष वनस्पति न हो ते ब्रह्माण्ड का रक्षा कवच कौन देगा?जीवमात्र की रक्षा कैसे होगी?सर्प, बिच्छू, जंगल में शेर न हो तो ब्रह्माण्ड विष को निगल, आक्सीजन प्राणधारिणी गैस कौन प्राणी उगलेगा?माता धर्मनिरपेक्ष हो जावें तो सन्तान कहां से आएगी?सृष्टिक्रम को कौन जीवित रखेगा?सूर्यधर्मनिरपेक्ष हो जावे तो ऊर्जा कहां से मिलेगी?अधर में लटकें ग्रहों को अपने आकर्षण में कौन ठहराये रखेगा?चन्द्रमा धर्म निरपेक्ष हो जावे तो अमृत कहां से मिलेगा?वायु धर्म निरपेक्ष हो जावे तो शब्दवाणी कहां से मिलेगी?पृथ्वी धर्मनिरपेक्ष हो जावे तो सृष्टि को कौन धारण करेगा?अन्न कहां से मिलेगा?जल धर्मनिरपेक्ष हो जावे तो जीवन रस कहां से मिलेगा?प्रलयकाल में सृष्टि को कौन धारण करेगा?मातृगर्भ में शिशु का ओढन व बिछौना तथा पाशा बन कौन उसकी रक्षा करेगा?धर्म निरपेक्ष राजनीति अन्धी होती है?लंगड़ी होती है?मूर्ख होती है। धर्मनिरपेक्ष प्राणी अंधा, नास्तिक होता है, जंगली और गुलाम होता है, कायर रहता है नपुंसक रहता है, भिखारी रहता है। बुद्धिमान धार्मिक दूसरों को धर्मनिरपेक्षता रूपी भिखारिन की चादर उढ़ाकर अपना उल्लू सीधा कर लेते है। तथा अपने आपको धर्मनिरपेक्ष नहीं करते, वे धर्म निरपेक्ष होते भी नहीं है। स्वतंत्रता भी धर्मनिरपेक्ष नहीं होती, गुलामी धर्मनिरपेक्ष होती है।

आप स्वाभिमानी होना चाहते हैं, आत्मनिर्भर रहना चाहते है तो धर्म मर्यादा का मार्ग पकड़ो, भारतवीर बनो। पटेल, दयानन्द, सुभाष, झांसी की रानी के समान धर्म पर आरूढ़ रहो-अन्यथा तुम्हारे समान तुम्हारी संतान भी सदा गुलामों का जीवन बसर करेगी।

विद्यावाचस्पति वेदपाल वर्मा शास्त्री
मालदाबाग पुरानी गुडमण्डी, शाहपुर, मुजफ्फरनगर

thearyasamaj.org

चिन्तनीय मननीय एवं ग्रहणीय-

देश शक्तिशाली कब बनता है

-टीकाराम आर्य

भद्रमिच्छन्त ऋषय स्वर्विदस्तयो
दीक्षामुपनिषेदुरग्रे।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्य
जातं तदस्मै देवा उप
संनमन्तु।।

शब्दार्थ- स्वर्विद- सुख शान्ति का जानने और प्राप्त करने वाले ऋषय- ऋषियों ने, अग्रे- सर्वप्रथम, तप-सुख-दुखादि सहन करने की क्षमता, दीक्षाम- नियम व्रतादि को, उपनिषेदु-ग्रहण किया, ततः- उस तप और दीक्षा के आचरण से, राष्ट्रम-राष्ट्रीय भावना, बलम-बल, ओजश्च- ओज, जातम्-उत्पन्न हुआ, तत-इसलिए अस्मै- इस राष्ट्र के सम्मुख, देवा-देव भी, उपसंनमन्तु-झुके अर्थात् उचित रूप से सत्कार करें।

प्रस्तुत मंत्र में मात्र एक ही विचार प्रस्तुत किया गया है कि राष्ट्र को पूर्ण रूप से शक्तिशाली बनाने के लिए आवश्यक है कि देशवासी तपस्वी और दीक्षित बने इन मुख्य गुणों के आचरण से देश शक्तिशाली व स्वाभिमानी बन जायेगा। और अन्य शक्ति सम्पन्न देश हमारी शक्ति को देखकर झुकेंगे, तथा हमारा सम्मान करेंगे।

बड़े संघर्ष त्याग, तप और बलिदानों के पश्चात् लगभग एक हजार वर्षो बाद 15 अगस्त 1947 को आर्यावर्त स्वतन्त्र हुआ। कुछ लोग कहते है कि -

साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल
दे दी हमें आजादी बिना खड्ग बिना ढाल।

यह कहना उचित नहीं है कि मात्र महात्मा गांधी जी ने बिन लड़ाई झगड़े के स्वतंत्रता दिला दी हो। इस स्वतंत्रता की वेदी पर अनेकों युवकों के बलिदान होने के पश्चात हम स्वाधीन हुए है। यह स्पष्ट है कि 5 मई 1857 के मंगल पाण्डे के बलिदान से लेकर 30 जनवरी 1948 के महात्मा गांधी के बलिदान तक इतनी लम्बी सूची है कि उसे देखते हुए यह उचित रूप से कहा जा सकता है कि इन स्वाधीनता के दीवानों ने अपने गर्म खून से दासता की अन्धकार पूर्ण रात्रि को प्रातःकाल के रूप में परिवर्तन किया तब जाकर कहीं 15 अगस्त 1947 को भारतवर्ष पूर्ण रूप से स्वतंत्र हुआ।

किस किस प्रकार के महत्वपूर्ण बलिदान स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए हुए, इस संदर्भ में थोड़ा सा वर्णन करना उचित है।

कलकत्ते के स्थान पर दिल्ली को जिस समय राजधानी बनाने के लिए अंग्रेज सरकार के निर्णय को मूर्त रूप देने के लिए वायसराय लार्ड होर्डिंग की दिल्ली के चांदनी चौक में हाथी पर सवारी निकल रही थी दर्शकों की अत्याधिक भीड़ थी लोग मकानों की छतों पर दर्शनार्थ खड़े थे तथा पुष्पों की वर्षा हो रही थी उसी समय किसी अज्ञात क्रांतिकारी ने हाथी पर बम फेंक दिया। बम से वायसराय का अंगरक्षक मर गया और वायसराय मूर्छित हो गये। जुलूस में भगदड़ मच गयी। पुलिस ने चांदनी चौक को चारो ओर से घेर कर अपराधी की तलाश शुरू कर दी, पूरा यत्न करने पर भी अपराधी का पता नहीं चला।

उस के पश्चात खुफिया पुलिस ने शक के आधार पर 113 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया। उन में परमानन्द के सहोदर भाई बाल मुकुन्द भी थे। बाल मुकुन्द जी का विवाह तो हो चुका था पर गौना नहीं हुआ था। बाल मुकुन्द की पत्नी का नाम रामरखी था। बाल मुकुन्द को दिल्ली जेल में बन्द कर दिया गया।

जिस समय बाल मुकुन्द जेल में बन्द थे उनकी पत्नी रामरखी अपने परिवार वालों के साथ जेल में बन्द अपने पति को देखने आई। उस समय विवाह के पश्चात यह पहला अवसर बाल मुकुन्द के दर्शन का था। गर्मियों के दिन थे जेल की कोठरी अत्यन्त तंग घुटन भरी अन्धकार पूर्ण थी। रामरखी ने आंखों में आंसू भर नयनों से पति को नमस्ते कर पूछा- रात को सोने के लिए क्या कहीं और स्थान पर ले जाते है। बाल मुकुन्द ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया-कैदी हूँ कोई शाही मेहमान तो नहीं कि जिस की सुख सुविधा के लिए दिन में कहीं और रात में कहीं और विश्राम का प्रबंध किया जाये। रामरखी ने थोड़ी देर बाद पूछा- कि खाने को क्या देते है। बाल मुकुन्द की जेब में जेल की आधी रोटी पड़ी थी उस रोटी को रामरखी की ओर बढ़ाते हुए कहा-मात्र एक समय में इस प्रकार की दो रोटी दी जाती है। रामरखी ने वह रोटी अपने दुपट्टे के कोने में बांध ली।

दिल्ली से लौट कर रामरखी अपनी ससुराल भल्ला कटियाला (जिला जेहलम) गई और अपनी ससुराल के सबसे तंग मकान की कोठरी में घास फूस बिछाकर तथा उसी प्रकार की दो रोटी खाकर निर्वाह करने लगी, अपनी रोटी में राख भी मिला लेती थी क्योंकि जेल की रोटी में राख मिली होती थी। जब तक बाल मुकुन्द पर मुकदमा वाद चलता रहा। रामरखी उसी तपश्चर्या पूर्ण स्थिति में भगवान का भजन करती रही। अन्त में वाद का निर्णय हुआ और बाल मुकुन्द को फांसी पर लटका दिया गया।

यह हृदय विदारक समाचार भल्ला कटियला भी पहुंचा। रामरखी ने अन्न जल त्याग दिया और ग्यारह दिन तक पति वियोग सहन करते हुए प्रभु भजन करती रही और अंत में अपने पति को सम्बोधित करते हुए कहा-आज आप को संसार से गये हुए ग्यारह दिन व्यतीत हो गये है इससे अधिक आप के वियोग को सहन नही कर सकती। यह कहते हुए एक लम्बे सांस के साथ उसने अपनी जीवन लीला समाप्त कर दी। तप और दीक्षा की भट्ठी में तपे हुए ऐसे व्यक्तियों के बलिदान से स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

ऐसे एक दो नहीं हजारों बलिदानों के बाद स्वतंत्रता हमें मिली है। प्रसंगवश लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के जीवन की घटना का उल्लेख करना भी यहां अत्यन्त आवश्यक है-

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक को भारत से निकाल कर माण्डले की जेल में बन्द कर दिया गया। तभी उन की पत्नी सत्यभामा की 55 वर्ष की आयु में मृत्यु हो गयी यह समाचार भारत से माण्डले की जेल में तिलक जी के पास जेलर के माध्यम से भेजा गया। माण्डले जेल का जेलर तिलक जी के आचार व्यवहार एवं विद्वता से अत्यधिक प्रभावित था और उन का भक्त बन गया था, इसलिए वह उन की पत्नी की मृत्यु सूचना को स्वयं लेकर तिलक जी के पास गया।

जेलर जब मृत्यु सूचना का कागज हाथ में लेकर उनके कमरे में पहुँचा तो तिलक जी अपने ग्रंथ को लिखने में संलग्न थे। जेलर ने तिलक को नमस्ते करने के बाद वह समाचार पत्र उन के सामने रख दिया। तिलक जी ने उसे पढ़ा और उल्टा कर के सामने रखी पुस्तक पर रख दिया। जेलर ने कहा-आपने इस पत्र को पढ़ लिया। तिलक ने शान्त भाव से कहा हाँ मैने पढ़ लिया। जेलर ने पुनः कहा इसमें आपकी पत्नी की मृत्यु का दुखद समाचार है। उन्होंने कहा हां यही बात है। जेलर ने फिर कहा- मैने अपने जीवन में आप जैसा कठोर व्यक्ति नहीं देखा जिसकी आंखों से अपनी पत्नी के मरने पर दो आंसू भी न गिरे। जेलर के शब्दों ने तिलक को झकझोर दिया और कहा- जेलर महोदय मैं अन्य गृहस्थियों के समान अपनी पत्नी से प्यार रखता था। इस संसार में उन की विदाई मेरे लिए अति दारूण और दुखदायी है, किंतु उस के इस वियोग के अवसर पर आंसुओं का न गिरना हृदय की कठोरता नहीं है अपितु जेलर वास्तव में बात यह है कि मेरी आंखों में जितने आंसू थे उन्हें मैं भारत माता की दुखद अवस्था पर बहा चुका हूँ। अब मेरी आंखों में कोई आंसू न रहा जो मेरी पत्नी के मरने पर निकलकर बाहर आता।

तिलक के हृदय का चित्र खींचना हो तो एक उर्दू के कविद्वारा कहा जा सकता है-

गम हो तो हद सवा या अश्क
अश्रुवर्षा न हो
उस से पूछो जिसका घर
जलता हो और पानी न हो

राम प्रसाद बिस्मिल, अश्फाकउल्ला खां, चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव, खुदीराम बोस, 56 दिन लाहौर जेल में भूखा रहकर यतीन्द्र नाथ दास 13 सितम्बर 1929 को शहीद हुए। मदन लाल ढींगरा, सुभाष चन्द्र बोस आदि अन्य कितने ही मूल्यवान जीवन स्वाधीनता संग्राम में शहीद हुए।

किंतु हमारा दुर्भाग्य है कि अब चारों ओर स्वार्थता, भ्रष्टाचार का नग्न नाच हो रहा है। युवक-युवतियां अनुशासनहीन और बेनकेल के ऊँट है। लूटपाट और डाकाजनी की आंधियां चल रही है। देश व मानव समाज की यह दुर्दशा विचारशील मनुष्य के मन में अत्यधिक वेदना उत्पन्न करती है।

मान्य पाठकवृन्द अथर्ववेद के उपरोक्त मंत्र में देश को शक्तिशाली बनाने के लिए विशेष साधनों का समावेश किया गया है। यदि वेद के परामर्श अनुसार हम देशवासी तप त्याग के विचारों को जागृत कर सके तो यह मातृभूमि की बहुत बड़ी सेवा होगी।

तप त्याग और दीक्षा का यह लाभ होगा कि राष्ट्रवासियों में राष्ट्र के प्रति पवित्र भावना जाग्रत होगी और राष्ट्र शक्तिशाली बन जायेगा। राष्ट्र को शक्तिशाली और सम्मानित करने के लिए दूसरा कोई मार्ग नहीं है। इसके लिए परम आवश्यक है कि देश के वातावरण और शिक्षा को तप और दीक्षा के पवित्र मार्ग की ओर मोड़ा जाये।

thearyasamaj.org

पृष्ठ.....१ का शेष

कुछ बोलने लगे व समझने लगे तब सुन्दर वाणी और बड़े छोटे मान्य माता पिता के पास बैठने आदि की शिक्षा करे। अर्थात् जब बालक को होश आवे तब माँ उसे लोक व्यवहार व शिष्टाचार सिखाये। इसी के साथ "देवनागरी अक्षरों का अभ्यास कराये, अन्य देशीय भाषाओं के अक्षरों का भी" यहाँ दूरदर्शी ऋषि अनायास शैशवकाल से ही एकाधिक भाषाओं के ज्ञान ग्रहण का उपदेश देकर देश विदेश के विभिन्न भागों में सामंजस्य पैदा करते हैं।

"इसी बीच पिता का परम कर्तव्य है कि वह बालक को आत्म विश्वास, शौर्य, संयम, धैर्य, प्रसन्नता एवं सत्यभाषण में रूचि पैदा करें। इसमें राजनियम 000000 होना चाहिए कि पांचवे अथवा आठवें वर्ष से आगे अपने लड़के लड़कियों को घर में न रखकर पाठशाला में अवश्य भेज देवें जो न भेजे वे दण्डनीय होवें"। इस प्रकार घर की शिक्षा के पश्चात् ऋषि बालक को विद्यालय में भेजने का आदेश देते है।

वेदारम्भ एवं उपनयन संस्कार या औपचारिक शिक्षा का प्रारम्भ-

जन्म के पांचवे वर्ष तक माता छठें से आठवें तक पिता शिक्षा करें। नौवें वर्ष के आरम्भ में अपनी सन्तानों का उपनयन करके जहां पूर्ण विद्वान और विदुषी स्त्री शिक्षा और विद्यादान करने वाली हों, वहां लड़के लड़कियों को भेज देवें।

गुरू शिष्य सम्बन्ध - वैदिक ऋषि दो पक्षों गुरू एवं शिष्य की अत्यंत निकटता चाहते है। दोनों को एक प्राण दो शरीर बनाना चाहते है। आचार्य उपनयमानी ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भवन्त। तं रात्रिस्तिस सवरे विभर्ति। तं जातं दृष्टुमसंयन्ति देवा। अथर्व 11/5/3

अर्थात् "आचार्य उपनयन की कामना से ब्रह्मचारिरूप गर्भ को अपने अन्दर धारण कर लेता है। उसको तीन प्रकार की अंधकार रूप अज्ञान रात्रियों के दूर होने तक अपने उदर में धारित करता है पालित पोषित करता है जब अन्तर्वासी का द्वितीय जन्म होने पर उसके दर्शनार्थ विद्वत समाज सब ओर से जुट जाता है।

गुरू शिष्य की परस्पर निकटता एवं संबंध ही वैदिक शिक्षा का आधार है। गुरूकुल में छात्र का खान-पान, भरण-पोषण श्वास-प्रश्वास, वृद्धि ह्रास, सुख-दुख, दायित्व कर्तव्य परस्पर जुड़े जैसे माता के उदरस्थ शिशु से। छात्र-छात्रा का संसार से संबंध अपने आचार्यो के माध्यम से हो। उदरस्थ शिशु व माता में जितनी समीपता होती है उतनी ही गुरू शिष्य में होनी चाहिए। मन वचन कर्म आचरण भावना संवेदना एक ही हो, कहीं दुरंगापन या दूरी या दिखावा न हो। जिस प्रकार माता अपने उदरस्थ शिशु के भौतिक शरीर की वृद्धि के लिए उत्तम खान पान व्यवहार, खुशी संतुष्टि रखती है उसी प्रकार आचार्य भी शिष्य की रखें।

वैदिक शिक्षा दर्शन का प्रमुखतम स्तम्भ आचार्य ही होता है। शतपथ ब्राह्मण का वचन मातृमानपितृमान आचार्यवान पुरूषोवेद अर्थात जब तीन उत्तम शिक्षक एक माता दूसरे पिता तीसरा आचार्य होते है तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है। परंतु आचार्य कौन?ऋषि उत्तर देते है- उस व्यक्ति को जो विद्यार्थी को अत्यन्त प्रेम से धर्मयुक्त व्यवहार की शिक्षा प्रेम पूर्वक विधी देने के लिए तन, मन व धन से यत्न करे उसे आचार्य कहते हैं।

आचार्य का जीवन ही आदर्श हो- जो शिष्य को आचार ग्रहण करवाता है वही आचार्य है। आचार्य के मन वचन और कर्म तथा व्यवहार से बच्चा सीखता है। आज जिस प्रकार शराब की बोतल पर शराब हानिकारक के लिखने मात्र से शराब का प्रचलन घटने के स्थान पर बढ़ रहा है। आचार्य को अपने व्यक्तिगत आचरण से शिक्षा से ही शिशु भावी नागरिक का आचरण बनेगा।

आज का शिक्षक समझता है कि शिक्षक स्कूल/कालेज से 200 से 5000 या अधिक रूपये दैनिक दिलाने का धन्धा है। विद्यार्थी उसे 20 रू. से 2 लाख तक मासिक पर प्रायोजित किराए का मजदूर समझते है। आज बालक का जन्म योजनानुसार न होकर अचानक मौका पाकर वासना-तृप्ति का परिणाम है। दबे घुटे एवं विलासी संस्कार हीन एवं मजबूर माता-पिता है। चारों पक्ष माता-पिता, आचार्य, राजा एवं छात्रा कर्तव्यच्युत है तो राष्ट्र क्यों न कर्तव्यहीनता बेईमानी व रिश्वतखोरी का घर बनें?

परिवार से दूर- देश की भावी पीढ़ी के निर्माण के लिए ऋषि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में लिखते है "उनके माता-पिता अपनी सन्तानों से व सन्तान अपने माता पिता से न मिल सकें और न किसी प्रकार का पत्रा व्यवहार एक दूसरे से कर सके जिससे सांसारिक चिन्ता से रहित होकर केवल विद्या बढ़ाने की चिन्ता रखें।

आज पाश्चात्य सभ्यता में बच्चा सज्ञान होते ही माता पिता से स्वतंत्र होकर आजीविका शिक्षा व अन्य निर्णय स्वयं लेने को स्वतंत्र व बाध्य है।

अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा- ऋषि शिक्षा का राष्ट्रीय कर्तव्य जन जन का मौलिक अधिकार घोषित करते हैं जो राष्ट्र का प्रमुखतम कर्तव्य है। शिक्षा की अनिवार्यता का आदेश देते हुए कहते है- राजा की आज्ञा से 7 वर्ष पश्चात लड़का व लड़की किसी के घर में न रहने पावें किन्तु आचार्यकुल में रहे"

समान खान पान व गुरूकुल प्रणाली- ऋषिवर के अनुसार शिक्षाकाल पर्यन्त कुमार व कुमारी ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए गुरूकुल वा कन्याकुल में रहें। सबको तुल्य वस्त्र, खान-पान आसन दिये जाए चाहे वह राजकुमार व राजकुमारी हो चाहे दरिद्र की सन्तान हो। शिक्षा के साम्यदर्शन की परिकल्पना से समाज में भ्रातृत्व के भाव एवं पारिवारिक समरसता के भाव स्पष्टतः दृष्टिगोचर होते है। गुरूकुल व कन्याकुल की परिकल्पना वस्तुतः वर्तमान काल में निःशुल्क आवासीय विद्यालयों का आदर्श रूप है।

सहशिक्षा से दूर- स्वामी दयानन्द का मत था कि लड़के लड़कियां अलग पाठशाला में पढ़े जो ग्राम से चार कोस तथा परस्पर दो कोस से अधिक दूर हो। इस विषय में वे इतने कठोर थे कि "स्त्रियों की पाठशाला में पांच वर्ष के लड़के व लड़कों की पाठशाला में पांच वर्ष की कन्या भी न जाने पावे" इस प्रकार वे सहशिक्षा के घोर विरोधी थे।

आवश्यक नारी शिक्षा-एक समय था जब स्त्रियां घरों में बन्द थी। अशिक्षित रहना उनकी मूलभूत मजबूरी थी। स्त्रीशूद्रो नाधीयातम् "श्रुति" का नारा बुलन्द था। ऋषिवर ने फटकारा यह तो श्रुति के नाम पर गप्प है। वेद सब स्त्री पुरूषों को समान रूप से पढ़ने का अधिकार देता है यहां तक कि जो स्त्रियों के पढ़ने का निषेध करते है वह तुम्हारी मूर्खता, निर्बुद्धि एवं स्वार्थ का प्रमाण है। स्वामी जी महाराज गृहस्थ को आनन्दमय एवं अनिन्द्य बनाना चाहते है। स्त्रियों को विद्या की अधिकारिणी एवं पति के समान बनने को तैयार किया। यदि स्त्री अनपढ़ हो तो महर्षि के शिक्षा दर्शन का प्रमुख स्तम्भ "माता का दायित्व" शून्य हो जाता है एवं सारा शिक्षा का ढांचा ध्वस्त हो जाता है। इसी से स्त्री शिक्षा के महत्व को जाना जा सकता है।

ट्यूशन नहीं निःशुल्क शिक्षा- वैदिक शिक्षा सर्वथा निशुल्क है, ट्यूशन का कोई स्थान नहीं है।

रोजगारोन्मुख शिक्षा- ऋषि दयानन्द बालक बालिकाओं की शिक्षा के अन्त में दीक्षा का विधान करते है। बालक बालिकाओं को गुण कर्म स्वभाव रूचि मानसिकता बुद्धि के अनुसार शिक्षा देने की योजना देते है। बाल्यकाल में ही हर बालक स्वरूचि के अनुसार पूर्ण योग्यता से विद्यार्जन करे। ऋषिवर समाज की मांग के अनुरूप भावी पीढ़ी को चार भागों में विभक्त करके चार वर्णो का विधान करते हैं, बालक जिस क्षेत्र में बढ़ने की योग्यता रखता हो उस क्षेत्र में विद्याध्ययन करे, ताकि शिक्षा की पूर्णता के पश्चात् समाज में अपने भावी वर्ण/रोजगार की योजना में जुट जाये। ऋषिवर वर्णव्यवस्था को जन्म के स्थान पर कर्म एवं शिक्षा से लागू करते है।

औपचारिक शिक्षा व परीक्षा शिक्षक एवं आचार्य व्यावहारिक शिक्षा योजना प्रदान करता है। उदाहरणतया गुण, कर्म, स्वभाव, शक्ति क्षमता बुद्धि के अनुसार यदि बालक कृषि कार्य में प्रवृत्त होना चाहता हो तो उसे कृषि का प्रैक्टिकल शिक्षण, सिद्धान्त व व्यवहार सिखाया जाये।

अन्याय के विरूद्ध लड़ने के लिए तैयार तरूण राम लक्ष्मण की तरह शस्त्र व शास्त्र की परीक्षा राक्षस युद्ध व यज्ञ रक्षा से होती है। "महाराष्ट्र में घोड़े पर चढ़ना व घुडसवारी करना, पेड़ पर चढ़ना व उतरना, पहाड़ पर चढ़ना व उतरना आदि शिक्षा का अंग था, विद्या क्रियाशील व स्वतंत्र थी।

इसप्रकार कच्ची मिट्टी के समान शिष्य को पूर्ण परिपक्व सर्वगुण सम्पन्न विनम्र बनाकर समावर्तन संस्कार करके सौंप देते है।

दीक्षा- वैदिक शिक्षा का चरम बिन्दु है दीक्षान्त अथवा समावर्तन संस्कार। दीक्षा का व्यावहारिक अर्थ है ठेका लेना। जिस प्रकार एक ठेकेदार पूरे प्राणप्रण से किसी ठेके वाले कार्य को पूरा करने का यत्न करता है। विद्या प्राप्त करके एक युवा ब्रह्मचारी समाज में व्याप्त पाखण्ड अज्ञान आदि को समाप्त करने के लिए ब्राह्मण वर्ग में दीक्षित होगा। जिस प्रकार मथुरा में प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द की कुटिया में अखण्ड आदित्य ब्रह्मचारी दयानन्द समाज में व्याप्त अज्ञान अंधकार, पाखण्ड को समाप्त कर वेद ज्ञान के प्रचार प्रसार के लिए जीवन के अंतिम रक्त कण तक समर्पित करने का प्रतिज्ञा ली थी।

इसीप्रकार वैश्य का विद्या प्राप्ति का लक्ष्य धन व सम्पत्ति इकठ्ठी करना न होकर समाज में अभाव की समाप्ति के लिए गरीबी, मंहगाई भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए धन कमाना है।

क्षत्रिाय का लक्ष्य शारीरिक शक्ति प्राप्त करके शस्त्र सीखकर समाज में फैले आतंकवाद, हिंसा अन्याय को समाप्त करना है। महर्षि दयानन्द इस विश्व को वैदिक परम्परा के अनुसार वर्णाश्रम-व्यवस्था से व्यवस्थित करना चाहते थे इसलिए वर्तमान ढांचे को उखाड़ वे एक क्रांतिकारी विश्व का निर्माण करना चाहते थे। इसके लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान उन्होंने शिक्षा को दिया।

ऋषि दयानन्द ने मानव के सर्वांगीण विकास को शिक्षा का उद्देश्य कहा है। उस ऋषि का दर्शन एक पूर्ण जीवन का मार्ग प्रस्तुत करता है । अन्नमय कोष से आनन्दमय कोष तक प्राप्ति का मार्ग बताया है। ऋषि ने इस संसार को सच्ची और वास्तविक कर्मभूमि कहा है। वर्तमान विश्व को एक सुखद, शान्त मनोरम एवं भव्य एवं भविष्य की प्राप्ति के लिए उसे ऋषिवर के शिक्षा दर्शन को पूरी तरह अपनाना होगा। ●●●

thearyasamaj.org

सत्यार्थ प्रकाश और हम–

आर्य समाज अब क्या करे?

-स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

तनिक विचारें कि शताब्दी समारोह का करना कहीं आज का युगधर्म अथवा फैशन तो नहीं बन गया। यह ध्रुव सत्य है कि प्रदर्शन प्रधान इन शताब्दी समारोहों की बाढ़ में गम्भीर चिन्तन या ठोस काम करने की भावना सर्वथा लुप्त होती जा रही है। आये दिन होने वाले इन सभी शताब्दी समारोहों को अखिल भारतीय रूप देने की चेष्टा भी हम कर देते हैं। प्रत्येक समारोह में आर्य-जनता के लाखों नहीं करोड़ों रूपये व्यय हो जाते है। हां! इतना अवश्य है कि भीड़ की दृष्टि से यह समारोह सफल होते हैं। आयोजकों को विपुल धनराशि भी प्राप्त हो जाती है। किन्तु इन सब के बदले आर्य समाज को क्या उपलब्धि हुई- इसे न हम जानते हैं और न हमारे नेता ही बताने में समर्थ हैं। आवश्यकता तो इस बात की है कि वाहवाही से दूर रहकर किसी योजना को तैयार करके उसे व्यावहारिक रूप देकर रचनात्मक कार्य किए जाएं।

अब किसी रूप में सही, सत्यार्थ प्रकाश व्यापक रूप में चर्चा का विषय बना हुआ है। सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार और प्रसार करना भी आवश्यक है किन्तु इससे अधिक आवश्यक है उसमें लिखी बातों की ओर ध्यान देकर उन्हें व्यावहारिक रूप देना। समारोहों में सम्मिलित होने वाले हजारों लोग भले ही सत्यार्थ प्रकाश के नाम से परिचित हो किन्तु उसमें क्या क्या लिखा है अनेकशः लोग अनभिज्ञ हैं। विचारशील लोग सहज में अनुमान लगा सकते हैं कि इतना बड़ा परिश्रम और व्यय केवल भीड़ इकट्ठी कर लेने तक ही समाप्त न हो जाए वरन् कुछ रचनात्मक और ठोस उपलब्धि हो जाए तभी यह समारोह किचिंत श्रेयस्कर बन सकेंगे। आर्य समाजी जनता, आर्य समाज के नेताओं विभिन्न सभाओं के अधिकारियों, संसद तथा विधान सभाओं के सदस्यों का कर्तव्य है कि अपनी अपनी सीमाओं में सत्यार्थ प्रकाश की मान्यताओं को व्यावहारिक रूप देने का यत्न करें।

आर्य समाज का कार्यक्रम क्या है?

आर्य समाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं और आर्यसमाजी पत्र-पत्रिकाओं की संख्या बढ़ती जा रही है। आये दिन मनायी जाने वाली शताब्दी के नाम पर होने वाले बड़े-बड़े जलसों और जलूसों की भीड़ देखकर लगता है कि हम दिग्विजय करने निकल पड़े हैं। विदेशों में होने वाले आर्य सम्मेलनों की बातें पढ़-पढ़ कर लगता है कि 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का स्वप्न पूरा होने में अब अधिक देर नहीं हैं। परन्तु वास्तविक स्थिति कुछ और है। पहले की अपेक्षा मत-मतान्तरों की संख्या कई गुना बढ़ गई हैं। पहले एक समय में ईश्वर का एक अवतार होता था। अब एक साथ दर्जनों भगवान धरती पर विचरण कर रहे हैं। पहले ईश्वर का आरोप कर मूर्ति की पूजा की जाती थी अब मनुष्यों की मूर्तियों और समाधियों की पूजा होने लगी है। पहले जो काम व्यक्तिशः होते थे वे अब योजनाबद्ध रूप में किये जाने लगे है। धार्मिक अंधविश्वासों को बढ़ावा देने के लिए करोड़ो रूपये खर्च किये जा रहे है। देश के बड़े बड़े नेता अपने अंधविश्वासों का खुला प्रदर्शन कर रहे हैं। जनता का मार्गदर्शन करने और प्रगतिशील होने का दम भरने वाले बड़े बड़े अखबार करोड़ों की संख्या में छप कर चमत्कारों और फलित ज्योतिष की सच्चाई में विश्वास बढ़ा रहे हैं। रेडियों और टेलीविजन के माध्यम से मूर्तिपूजा, रामलीला आदि का धुंआधार प्रचार हो रहा है।

शास्त्रों का कथन है - 'यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः' अर्थात् यत्न करने पर भी यदि सफलता न मिले तो सोचना चाहिए कि प्रयत्न में कहां दोष है?दवा करने पर भी अगर मर्ज बढ़ता जाए तो दवा में दोष हो या चाहे रोग के निदान में - कहीं न कहीं दोष अवश्य हैं। निश्चय ही हमारी प्रचार प्रणाली में दोष आ गया है। विरोधी प्रचार के माध्यम बड़े सशक्त है। सिनेमा, रेडियों, अखबार आदि की पहुंच तो प्रतिदिन करोड़ों तक है। बरसों बीत जाने पर भी चेहरे नहीं बदलते-चेहरे भी झुर्रीदार!! वार्षिकोत्सव तक में हमारे सब सदस्य भी शामिल नहीं होते, आर्य समाजेत्तर लोगों की तो बात ही क्या, हमारे कार्यक्रम इस प्रकार निश्चित होने चाहिए कि नित नए लोगों में हमारी बात पहुंच सके। एतदर्थ निम्नलिखित सुझावों पर ध्यान देना चाहिए।

पारिवारिक सत्संगों की योजनाबद्ध व्यवस्था की जाए– जिस सदस्य के यहां सत्संग होना हो, उसे चाहिए कि आग्रहपूर्वक अपने सम्बन्धियों, पड़ोसियों तथा मित्रों को उसी प्रकार आमंत्रित करें जिस प्रकार अपने यहां होने वाले संस्कार आदि के अवसर पर आमंत्रित किया जाता है। जो आर्यसमाजी नहीं है वो भी इस परिवार में होने वाले सत्संग में सम्मिलित होना अपना कर्तव्य समझेंगे। ऐसे सत्संगों में व्यावहारोपयोगी मण्डनात्मक भाषण करना ही उचित होगा। प्रसंगवश सिद्धान्तों की चर्चा की जा सकती है।

साप्ताहिक सत्संगों का कार्यक्रम– ऐसा होना चाहिए कि पारिवारिक सत्संग से प्रेरणा पाकर यदि कोई नया व्यक्ति साप्ताहिक सत्संग में पहुंचे तो वह निराश न हो। समस्त कार्यक्रम पहले से निश्चित हों। यज्ञ, भजन और उपदेश के कार्यक्रम क्रमशः चलता रहे।

वार्षिकोत्सव में 2–3 व्याख्यान खण्डनात्मक अवश्य कराये– मूर्ति पूजा, अवतारवाद, मृतक श्राद्ध, अद्वैतवाद, वेदों का अपौरूषेयत्व, वेदों में इतिहास, वेदों में मांस-मदिरा, राधास्वामी, सांई बाबा, रजनीश आदि के मत-मतान्तरों, सायण आदि की तुलना में महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य की श्रेष्ठता आदि विषयों पर भाषण होने चाहिए। आमंत्रित विद्वानों को पहले ही उनके भाषण के विषय में सूचित कर दिया जाए। उत्सव के कार्यक्रम में वक्ताओं के नाम के साथ उनके भाषण का विषय भी लिखा जाय। ऐसे व्याख्यानों का विज्ञापन विशेष रूप से किया जाये।

वर्ष में एक बार किसी विषय पर शास्त्रार्थ का आयोजन किया जाये– अपने-अपने विद्वान् का उत्साह बढ़ाने के लिए तथा उत्सुकता के कारण शास्त्रार्थ में आर्य समाजेत्तर श्रोता शास्त्रार्थ में सहज ही आ जाते हैं। यहां आकर वे हमारी बात सुनेंगे और उनमें से कुछ कुछ लोगों के हृदय में हमारी सच्चाई अंकित होगी।

वेदों के प्रति श्रद्धा– हम समझते थे कि जैसे जैसे लोग वेदों को जानेंगे वैसे वैसे बुद्धिजीवी वर्ग में उनके प्रति श्रद्धा बढेगी। किंतु वस्तुस्थिति इसके सर्वथा विपरीत है। बौद्धिक स्तर पर सर्वत्र वे व्यक्ति छाये हुए हैं जिन्होंने भारतीय विश्वविद्यालयों में संस्कृत में एम0ए0 करते समय ही वेदों की झलक देखी है। इन्हें पढ़ाने वाले प्राध्यापक स्वयं सायणादि, पौराणिक एवं पूर्वाग्रहों से युक्त पाश्चात्य विद्वानों की दृष्टि से प्रभावित हैं। वेदों का जो स्वरूप इन छात्रों के सामने आता है उसे देखने के बाद वेद अपौरूषेय और सब सत्य विद्याओं के ग्रंथ न रहकर साधारण लोगों द्वारा रचित किस्से कहानियों की पुस्तकें रह जाती हैं। इतिहास में एम0ए0 करने वाले छात्रों को वैदिक कालीन इतिहास के प्रसंग में भी यही सब कुछ पढ़ाया जाता है। वे पढ़ते है कि यहां के आदिवासी कोई और है, आर्य लोग तो बाहर से आकर यहां के आदिवासियों को लड़ाइयों में जीतकर यहां बस गए है!! संस्कृत और इतिहास में एम0ए0 करने वाले ये छात्र अध्यापक बन कर स्कूलों और कालिजों में अपने छात्रों को वही सब कुछ पढ़ाते हैं, जो वे पढ़कर आये हैं। इस प्रकार शिक्षित वर्ग वेदों के इसी स्वरूप को जानता और मानता है।

इसे देख सुनकर उसके मन में वेद के प्रति विरक्ति एवं घृणा के भाव ही उत्पन्न होते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि - आर्य समाज के एतदर्थ समर्पित उच्चकोटि के विद्वान आर्य समाज के उत्सवादि का मोह छोड़कर विश्वविद्यालयों व कालेजों को अपना केन्द्र बनायें और वहां अध्यापन कार्य में लगे संस्कृत तथा इतिहास विभाग के अध्यापकों से सम्पर्क स्थापित कर वेदों के सम्बन्ध में उनका दृष्टिकोण ठीक करें। उनके दिमाग बदल जाये तो कालान्तर में सारा सिलसिला बदल जाएगा।

पौराणिक विद्वानों के साथ मिलकर वेद सम्बन्धी गोष्ठियों का आयोजन किया जाये- जिसमें प्रेमपूर्वक वार्तालाप द्वारा पक्ष-विपक्ष में विचार करके उन्हें अपने पक्ष में लाने का प्रयत्न हो। सार्वजनिक रूप में शास्त्रार्थ के समय 'अहम्' के कारण हठ और

शेष पृष्ठ.....६

thearyasamaj.org

19 अप्रैल जिनकी जन्म जयन्ती थी-

कर्मयोगी महात्मा हंसराजः एक अनमोल व्यक्तित्व

एक दीपक जल उठता है उससे केवल चारो ओर का अंधकार ही दूर नहीं होता अपितु उसकी शिखा के स्पर्श से और भी दीपक प्रदीप्त हो उठते है और सम्पूर्ण वातावरण को प्रकाशमान कर देते है। भारत क महाविद्वान महर्षि दयानन्द के जीवन के स्पर्श से महात्मा हंसराज का जीवन विमल विभा से उज्ज्वल हो उठा था। साधनहीन ग्रामीण परिवार में जन्म लेकर एक व्यक्ति चारो ओर की प्रतिकूल परिस्थितियों से संघर्ष करता हुआ उन्नति के शिखर पर पहुँच सकता है तो इसका उदाहरण थे महात्मा हंसराज।

19 अप्रैल 1864 को पंजाब के बजवाड़ा ग्राम होशियारपुर में जन्मे महात्मा हंसराज ने मात्र 22 वर्ष की आयु में सन् 1886 में सीमित साधनों के उपरान्त आर्य समाज लाहौर के भवन में दयानन्द ऐग्लो वैदिक स्कूल की स्थापना की। बी0ए0 की परीक्षा उत्तीर्ण कर सरकारी एवं आकर्षक नौकरियों को ठुकराकर आर्य समाज लाहौर के प्रधान को पत्र लिखकर दयानन्द स्कूल खुलने पर अवैतनिक मुख्याध्यापक बनने की इच्छा जताई और लिखा- मैं तो उन व्यक्तियों में से हूँ जो यह समझते है कि एक पीपल के पेड़ के नीचे बेंचों और दरी के बगैर घास के ऊपर बैठ कर लड़को को शिक्षा दी जा सकती है। मैं कहता हूँ कि अच्छे आदमी बनाने के लिए सजावट की आवश्यकता नहीं होती।

महात्मा हंसराज का जीवन त्याग की आभा, बलिदान की ज्योति एवं विवेक की दीपशिखा से प्रज्ज्वलित था। उनका जीवन सच्चे कर्मयोगी की भांति आसक्ति से रहित था। सन् 1886 से सन् 1911 तक उन्होंने दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज रूपी पौधे को सींचा और जब उसने वृहद वृक्ष का रूप धारण कर लिया तो प्राचार्य पद का त्याग कर आर्य समाज के प्रचार में तल्लीन हो गये। वे बिगड़े काम की बागडोर हाथ में लेते थे और उसको सुधारने और व्यवस्थित करने के बाद स्वयं को उस कार्य से अलग कर लेते थे। उनकी जीवन शैली में अनासक्ति और त्याग ही सर्वत्र सुशोभित है।

निस्वार्थ लोकोपकारी जीवन का यह आदर्श उनकी वाणी से दृष्टिगोचर होता है। उनके आदर्श के महान सौन्दर्य को वर्णित करते हुए अपना जीवन चरित्र छपवाने से इंकार करते हुए उन्होंने कहा कि- बादल कहां से उठा?किस रास्ते से आया?बरखा की बूंदे कहती है तुम्हें इससे क्या?तुम अपने खेत की सिंचाई करा लो, सूखी खेती हरी बना लो, रीते तालाब भरवा लो।

अपनी निर्धनता में आनंदित और तप व त्याग की मिसाल थे महात्मा हंसराज। अलीगढ़ विश्वविद्यालय के संस्थापक सर सैयद अहमद खां डी0ए0वी0 कालेज देखने लाहौर आये। उन्होंने कालेज को देखकर कहा कि हमारे कालेज की इमारते आपसे अधिक विशाल है। हमारी साइंस की प्रयोगशालाएं अधिक शानदार है परंतु अफसोस कि हमारे पास कोई हंसराज नहीं है।

प्रबंधन में कुशल महात्मा हंसराज द्वारा रचित साहित्य उनके बुद्धिजीवी होने का प्रमाण स्वयं देता है। उन्होने मानव संग्रह, संध्या पर व्याख्यान, दशप्रश्नी की समीक्षा एवं ऋषि दर्शन भाग जैसा साहित्य लिख कर मानव धर्म की व्याख्या की। वे आर्य समाज के सर्वमान्य नेता एवं शिक्षा शास्त्री थे। वैदिक धर्म प्रचार के साधन शीर्षक ग्रंथ की रचना का उल्लेख भी मिलता है।

महात्मा जी ने आर्य समाज के प्रचार के रूप में डी0ए0वी0संस्था को पल्लवित करने को सर्वोपरि माना जहां उन्हें निजी सम्बन्धों का परित्याग करने में भी कोई संकोच नहीं था। अपने ध्येय को सर्वोपरि मानते हुए वे कहते थे कि मनुष्य के जीवन का एक ध्येय होना चाहिए एक केन्द्र जहां पहुंच कर वह अपना जीवन कुर्बान कर सके। अपनी धन, दौलत, और अपने बाल बच्चों को आसानी से छोड़ सकें। एक स्थान होना चाहिए जहां पहुंच कर वह गर्व से कह सके कि चाहे प्राण चले जाये चाहे सब ओर से विनाश का ताण्डव घेर ले पर वह उस स्थान से लौटेगा नहीं। पीछे नहीं हटेगा। ऐसे स्थान पर ही मनुष्य का वास्तविक चरित्र और उसका वास्तविक मोल मालूम होता है।

14 नवम्बर 1938 को विद्या, धर्म, बलिदान, तप, त्याग, सादगी का सूर्य अस्त हो गया। महात्मा जी ने आर्य समाज की मान मर्यादा के लिए अपना सर्वस्य समर्पित कर दिया तथा नैतिक चरित्र एवं शिक्षा की जगमगाती किरणों से अज्ञान रूपी अंधकार को नष्ट कर दिया। किसी कवि ने सच ही कहा है- ''हंस हंस के हंसराज ने तन मन व धन लुटा दिया।''

-प्राचार्य, डी.ए.वी. कालेज, अम्बालाशहर

पृष्ठ.....५ का शेष

दुराग्रह सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में बाधक बन जाते है।

हमारी शिक्षण संस्थायें- विदेशी शासन के जमाने में हमारी संस्थायें राष्ट्रवाद की पनौरी का काम देती थीं। उनमें पढ़ने पढ़ाने वालों पर आर्य समाज की छाप होती थी। किन्तु अब उनका कोई उपयोग नजर नहीं आता। हमारे कालेजों , स्कूलों के प्रिंसिपलों और मुख्याध्यापकों में भी अब शायद ही कोई आर्यसमाजी भावना के व्यक्ति हों। यदि कोई दिखाई भी देते है तो केवल इसलिए और उस दिन तक जब तक वे कुर्सी पर बैठे हैं। उनके अन्दर आर्य समाज कहीं नहीं। संस्था के संचालन का कार्य वे बड़ी कुशलता और तत्परता से करते हैं। किन्तु सिद्धान्त, व्यवहार, आचार-विचार, रहन-सहन आदि की दृष्टि से उनमें और दूसरी संस्थाओं के आचार्यो में कोई विशेष अन्तर नहीं मिलेगा। हमारी शिक्षण संस्थाओं में और दूसरी शिक्षण संस्थाओं में अब नाम मात्र का अन्तर रह गया है। और वह नाममात्र हमें बहुत महंगा पड़ रहा है। आर्य समाजों या प्रान्तीय समाजों में बड़े पैमानों पर होने वाले झगड़ों के मूल में उनके अधीनस्थ गुरूकुल कॉलेज ही मिलेंगे।

आर्यो का राज्य- हम प्राचीन काल में आर्यो के आदर्श एवं चक्रवर्ती राज्य पर गर्व करते है और फिर से वे दिन लाने के लिए आर्यसमाज को सामूहिक रूप से राजनीति में घसीटने की बात करते है। किन्तु जितनी कुछ सत्ता आर्यो के हाथ में है, उसके सहारे क्या हम ऐसा कुछ करके दिखा पाये हैं? जिससे लोगों को हमारे बारे में औरों से अच्छी राय बनाने का आधार मिल सके। जो अपने सीमित क्षेत्र में स्थानीय आर्यसमाजों, अपने प्रान्तीय एवं सार्वदेशिक संगठनों और तदधीन संस्थाओं का संचालन नहीं कर पा रहे, और इस निमित्त आपस में सिरफुटौव्वल कर प्रतिदिन अस्पतालों में खड़े रहते हैं, उनके हाथ में शासनतंत्र सौंप कर देश निश्चित हो जायेगा, कौन कैसे विश्वास करेगा?कभी श्री हरविलास शारदा और श्री धनश्याम सिंह गुप्त ने अपने व्यक्तिगत प्रभाव से ऐसे कानून बनवाने में सफलता प्राप्त की थी जो आर्यसमाज के सिद्धान्तों के पोषक थे। आज राजनीति में डूबे हमारे नेता इतना भी नहीं कर पा रहे हैं। (राष्ट्र को पवित्र लोगों का नेतृत्व चाहिए) ऐसे लोगों का जिनमें स्वार्थ, पक्षपात, ईर्ष्या-द्वेष, लोभ-लालच का लेश न हों, और जो किसी भी प्रकार के व्यसनों से परे हो। यदि ऐसे पवित्र लोगों का नेतृत्व हम प्रदान कर सकें, तो यही आर्य राज्य के निर्माण के लिए हमारा सब से बड़ा योगदान होगा।

नया खून- आवश्यकता पड़ने पर जब किसी आदमी को खून चढ़ाया जाता है तो इस बात का ध्यान रखा जाता है कि चढ़ाया जाने वाला खून रोगी के खून का वर्ग का हो, उसकी प्रकृति के अनुकूल हो। विपरीत गुणों वाला खून चढ़ाये जाने पर लाभ के बदले हानि भी हो सकती है। आर्य समाज में नये खून के नाम पर जिन लोगों की भरती की गयी और की जा रही है, वे आर्य समाज के सिद्धान्तों और मान्यताओं से कोसो दूर हैं। उन्हें आर्य समाज में लाने वाले लोग अपनी अपनी स्थिति मजबूत करने के उद्देश्य से चुनाव में हाथ खड़ा करने के लिए लाते हैं, और आने वाले भी किन्हीं स्वार्थो से प्रेरित होकर ही आते हैं। आर्यसमाज के नियमोपनियम, विधि विधान, आचार विचार, क्रियाकलाप आदि की उन्हें जानकारी नहीं होती। ऐसे लोगों का मुख्य लक्ष्य राजनीतिक होता है। राजनीति में धर्म आ जाये तो राजनीति पवित्र हो जाती है, किन्तु यदि धर्म चला जाये तो धर्म भ्रष्ट हो जाता है आज आर्य समाज की स्थिति कुछ ऐसी ही है।

आवश्यकता इस बात की है कि - उसके संगठन में प्रमुखता उन लोगों की हो जो विद्वान हों, सात्विक वृत्तिवाले हों, व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक रूप में ईमानदार हो तथा चौबीसों घंटे आर्यसमाज के ही हों।

कृणवन्तो विश्वमार्यम्- हमारे संगठन के निर्माण की प्रक्रिया नीचे से ऊपर को है, ऊपर से नीचे की नहीं। आर्यसमाजों की संख्या भले ही थोड़ी हो, सदस्यों की संख्या भी थोड़ी हों, किन्तु जितने भी हों खरे हो। खोटे सिक्कों से जेब भरी हो तो किस काम की ?विधि विधान के अनुसार नीचे से ऊपर तक संगठन का निर्माण हो। वेद का ज्ञान और तदनुकूल आचरण ही हमारी समस्त गतिविधियों का आधार हों।

●●●

भगवान राम सांस्कृतिक प्रेरणा के अक्षय भण्डार

काशी आर्य समाज बुलानाला के तत्वावधान में आयोजित रामनवमी समारोह को सम्बोधित करते हुये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के पुस्तकाध्यक्ष डॉ. जय प्रकाश भारती ने कहा कि भगवान राम हमारी राष्ट्रीय अस्मिता एवं आदर्शों के आधार हैं और संस्कृति के प्राण राष्ट्र कल्याण व विश्व मंगल के लिये राम चरित्र से मार्ग दर्शन ग्रहण करना होगा। सभा का संचालन श्रीनाथ सिंह प्रधान एवं संचालन प्रकाश

निर्वाचन

आर्य समाज नई मण्डी

मुजफ्फर नगर

प्रधान	:	श्री आनन्दपाल सिंह आर्य
मन्त्री	:	श्री आर०पी० शर्मा
कोषाध्यक्ष	:	श्री गुलबीर सिंह आर्य

thearyasamaj.org

वैदिक मिशन मुम्बई

''वैदिक मिशन मुम्बई'' ने आर्य समाज सांताक्रुज में 22-23 मार्च, 2014 को आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में अपना वार्षिकोत्सव मनाया। इसका मुख्य विषय था ''वैदिक विरक्त सम्मेलन'' जिसका संचालन स्वामी प्रणवानन्द जी ने किया। इस कार्यक्रम में स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित मुख्य तीन ग्रन्थों की समीक्षा की गयी तथा श्रोताओं को यह बतलाया कि इन ग्रन्थों से स्वस्थ समाज की रचना कैसे हो सकती है। इस सम्मेलन में आए सन्यासीगण, आचार्यों एवं प्राध्यपकों ने अपने अपने शोध पत्र भी प्रस्तुत किए। इस द्विदिवसीय कार्यक्रम में स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी शान्तानन्द जी, स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी डॉ. वेद प्रकाश श्रोत्रिय, डॉ. रघुवीर वेदालंकार, डॉ. महावीर मीमांसक, श्री सत्यव्रत सामवेदी आदि उदमद विद्वानों के प्रवचन हुए।

स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने ''फलित ज्योतिष ज्योतिष नहीं है'' इस विषय पर व्याख्यान देकर जनता को ज्योतिषों के चक्कर में न पड़ने के लिए सावधान किया। वैदिक मिशन मुम्बई के अध्यक्ष डॉ. सोमदेव जी शास्त्री द्वारा लिखित पुस्तक ''चतुर्वेद परिचय'' का विमोचन किया गया।

-संदीप आर्य,
मंत्री, वैदिक मिशन मुम्बई।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज अडींग मथुरा का वार्षिकोत्सव दिनांक 22-23 मार्च, 2014 को सोल्लास सम्पन्न हुआ। जिसमें 23 मार्च को प्रातः 8 बजे से 9:30 बजे तक यज्ञ, 10 बजे से 12 बजे तक भजन प्रवचन अपराहन 2 बजे से 5 बजे तक भजन प्रवचन रात्रि 8 से 11 बजे तक भजन प्रवचन हुये। दिनांक 23 मार्च को प्रातः 8:30 से 9:30 बजे तक यज्ञ 10 बजे से 12 बजे तक भजन प्रवचन 2 ब जे तक 5 बजे तक भजन प्रवचन रात्रि 8 से 11 बजे तक आजदी के क्रान्तिकारी वीर शहीदों की यशोगाथा एवं श्रद्धास्मरण।

उत्सव में आचार्य विपिन बिहारी आर्य मथुरा श्री बृज किशोर आर्य मथुरा श्री नरदेव आर्य संगीत भूषण भरतपुर कुं. उदयवीर सिंह भजनोपदेशक आचार्य प्रियंका भारती कन्या गुरूकुल मुसावर (राजस्थान) आदि के उपदेश भजन हुये।

-शिवदीप सिंह आर्य,
मंत्री

मंत्री के बयान की निन्दा

गंगोह (सहारनपुर) 11 अप्रैल, 2014 उ.प्र. आर्य युवा परिषद (रजि.) ने लोकसभा क्षेत्र रामपुर की किला मैदान जनसभा में प्रदेश के एक खास कैबिनेट मंत्री के (आजम खाँ) द्वारा दिये गये उस बयान की निंदा व आलोचना की जिसमें उन्होंने कहा कि देश की फासिस्ट ताकतें मुसलमानों को दोयम दर्जे का नागरिक मान रही हैं।

डॉ. वीर सिंह भावुक ने बैठक में कहा कि प्रदेश के खास व जिम्मेदार कैबिनेट मंत्री का फासिस्ट ताकतों का संकेत सीधे हिन्दुओं की ओर है जो हिन्दुओं का अपमान है। उन्होंने राष्ट्रीय एकता की बात करते कहा कि हिन्दू-मुस्लिम में दूरियां बढ़ाने व देश को तोड़ने वाले मंत्री के बयान राष्ट्रीय एकता वस सामाजिक ढांचे को कमजोर करने वाले और दूर्भाग्यपूर्ण हैं।

वोट जरूर दें।

गंगोह-उ0प्र0 आर्य युवा परिषद की ओर से डॉ. वीर सिंह भावुक ने मतदाता जागरूकता हेतु-मुबारिकपुर, जंघेड़ा, ढायकी, बीराखेड़ी, कम्हेड़ा, मेनपुरा, सलारपुरा, मेघनमजरा, बुढ्ढाखेड़ा, चमनपुरा, रंगैल, गांधी नगर आदि दर्जनों ग्रामों का भ्रमण कर हर मतदाता को अपने वोट देने के अधिकार का जरूर ही प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया।

डी.ए.वी. गुरूकुल कम्हेड़ा में पर्व मनाया

गंगोह (सहारनुपर) 31 मार्च, 2014 डी.ए.वी. कम्हेड़ा में नवसम्वत्सर 2071 एवं आर्य समाज स्थापना दिवस पर्व वृहद वैदिक यज्ञ हवन सहित भजन उदपदेश एवं भाषणों के कार्यक्रम पर सम्पन्न हुआ।

आचार्य जय प्रकाश ने सएम्बोधन में कहा कि आर्य समाज से व्यक्ति की पृथक पहचान बनतीहै भारत में अंग्रेजी वर्ष को तो जाना जाता है परन्तु हिन्दी वर्ष नवसंवत्सर को न जानना दुर्भाग्यपूर्ण है। हिन्दी वर्ष नवसंवत्सर का आरम्भ चैत्र सुदि प्रतिपदा को होता है। श्री वीर सिंह भावुक ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना करके समाज में फैले अन्धविश्वास आडम्बर पाखण्ड व कुरीतियों को समाप्त करने का बीड़ा उठाया था। सहारनपुर सेल टैक्स कमिश्नर सुनील सत्यम्, बारूराम आर्य, राजपाल सिंह भजनोपदेशक आभेराम ने भी विचार रखे। ब्रह्मचारियों का योग आसन व मलखम्भ कार्यक्रम भी प्रभावी रहा।

शोक सम्वेदना

दिनांक 27.4.2014 दिन रविवार को आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग, अलीगढ़ की एक आकस्मिक बैठक साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् संस्था प्रधान आचार्य मित्रसेन जी आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

उक्त बैठक में संस्था के उपमंत्री श्री अशोक भारद्वाज के पूज्य पिताश्री कृष्ण प्रसाद भारद्वाज के आकस्मिक निधन पर शोक श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। स्व. श्री भारद्वाज जी के द्वारा आर्य समाज संस्था को समय समय पर दिये गये सहयोग की सराहना की गयी।

बैठक में उपस्थित सर्वश्री विपिन बिहारी गुप्ता, महेन्द्रपाल वार्ष्णेय, नौबतराम वानप्रस्थी, विजय खण्डेलवाल, सोमदेव आर्य, सत्येन्द्र प्रकाश गुप्ता, उमेश चन्द्र गोयल, आर्य पुरोहित रणजीत शास्त्री, आर्य पुरोहित राजवीर 'वेदमुनि' आदि ने स्व. श्री भारद्वाज जी की सामाजिक स्तर से की गई सेवाओं की सराहना की।

अन्त में परमपिता परमेश्वर से शोक संतृप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने एवं स्वर्गीय की आत्मा को सद्गति की प्रार्थना की गई और 2 मिनट का मौन रख, शान्तिपाठ के पश्चात् सभा स्थगित की गई।

-राजेन्द्र पथिक
मंत्री, आर्य समाज अलीगढ़

धर्म का पालन करों आर्यो

-पं. नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक

भारत के सब नर नारी, अब वैदिक धर्म निभाओं तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओं तुम।
फैला था पाखण्ड जगत में, घोर अंधेरा छाया था।
भूल गये थे जगदीश्वर को, दया-धर्म बिसराया था।
व्याकुल थी दुनिया सारी, अब वैदिक धर्म निभाओं तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओं तुम।
धर्म समझकर यज्ञों में, नर बलि यहां दी जाती थी।
देवों को खुश करने में, गौ हत्या नित की जाती थी।
अज्ञान यहां था भारी, अब वैदिक धर्म निभाओं तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओं तुम।
बाल विवाह अनमेल विवाह, इस आर्यावर्त्त में होते थे।
ऋषियों के सुत-सुता हजारों, देव भूमि में रोते थे।
तब थी दुर्दशा हमारी, अब वैदिक धर्म निभाओं तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओं तुम।
लाखों विधवाएं बेचारी वेश्याएं बन जाती थी।
यवन, ईसाई ले जाते थे जीवन भर दुख पाती थी।
था करूण क्रंदन जारी, अब वैदिक धर्म निभाओं तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओं तुम।
ईश्वर की कृपा से भारत में ऋषि दयानन्द आए।
किया वेद प्रचार रात दिन, कभी नहीं वे दहलाए।
ऋषि थे अद्भुत ब्रह्मचारी, अब वैदिक धर्म निभाओं तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओं तुम।
पोप, पादरी, मुल्ला पण्डे ढ़ोंगी सभी पछाड़े थे।
वेद विरोधी नास्तिकों के, ऋषि ने होश बिगाड़े थे।
ऋषि थे त्यागी नृपधारी, अब वैदिक धर्म निभाओं तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओं तुम।
वेद विरोधी धूर्त कुचाली, जग में बढ़ते जाते थे।
मांसाहारी, दुष्ट शराबी, भ्रष्टाचार बढ़ाते थे।
है श्रेष्ठजनों की ख्वारी, अब वैदिक धर्म निभाओं तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओं तुम।
भारी है अफसोस आर्यो, आपस में तुम लड़ते हो
धन दौलत अरू उच्च पदों पर वृथा रोज झगड़ते हो।
है फूट बड़ी बीमारी, अब वैदिक धर्म निभाओं तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओं तुम।
कुटुम्ब कबीला, माल खजाना, पड़ा यही रह जायेगा।
धर्म एक है सच्चा साथी अन्तिम साथ निभायेगा।
ऋषियों की शिक्षा प्यारी अब वैदिक धर्म निभाओं तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओं तुम।
नंदलाल ऋषि दयानन्द के, उपकारों को याद करो।
धर्म का पालन करो आर्यो, जीवन मत बर्बाद करो।
बन जाओ परोपकारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।

ऐरवा कटरा में प्रवेश प्रारम्भ

आर्य गुरूकुल सेवा समिति द्वारा संचालित

आर्य गुरूकुल एरवाकटरा (औरैया) उ0प्र0 नवीन सत्र 2014-15 हेतु ब्रह्मचारियों का प्रवेश 15 मई से प्रारम्भ हो रहा है। विद्यालय उ0प्र0 शासन से मान्यता प्राप्त है। सात वर्षीय पाठ्यक्रम परीक्षाएं सर्वत्र मान्यश वेद दर्शन संस्कृत व्याकरण, साहित्य, हिन्दी, गणित, कम्प्यूटर, अंग्रेजी, धनुर्वेद सहित सभी विषयों के पठन पाठन की व्यवस्था अनुशासन, स्वास्थ्य संरक्षण एवं चरित्र निर्माण पर विशेष ध्यान, सुन्दर स्वच्छ पर्यावरण, स्थान सीमित है। कृपया शीघ्रता करें। नोट :- निर्धन परिवारों के योग्य मेधावी छात्रों को शुल्क में छूट का प्रावधान।

सम्पर्क सूत्र-आचार्य राजदेव शास्त्री
प्रधानाचार्य
चलभाष-9411239744

thearyasamaj.org

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्स:०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०६४५६८११५१६, मंत्री-०६६१६२६७६६६, सम्पादक-६५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com १

सेवा में,

....

....

....

गुरूकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन (मथुरा) में प्रवेश प्रारम्भ

योगिराज भगवान श्री कृष्ण की जन्मस्थली एवं युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की दीक्षास्थली पवित्र ब्रज भूमि मथुरा में प्रखर राष्ट्रभक्त महाराजा श्री महेन्द्र प्रताप द्वारा प्रदत्त सुविस्तृत भूखण्ड में स्थित श्रद्धेय नारायण स्वामी जी की तपस्थली गुरूकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण होने के उपरान्त ही विद्यार्थी को कक्षा 6 एवं 7 में योग्यता अनुसार प्रवेश दिया जा सकता है अथवा जिस विद्यार्थी को अन्य विषयों के साथ-साथ अष्टाध्यायी न्यूनतम 4 अध्याय कण्ठस्थ होगी, वह विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा के उत्तीर्ण होने पर कक्षा 8 में भी प्रवेश पा सकता है।

गुरूकुल में प्राच्य व्याकरण के साथ साथ अन्य सभी विषयों का गहनता से अध्ययन कराया जाता है। अतः विद्यार्थी का मेधावी होना आवश्यक है, इसलिए अभिभावक मेधावी, सुशील विद्यार्थी को ही प्रवेशार्थ लायें।

गुरूकुलीय परिवेश पूर्णतः वैदिक संस्कारों से परिपूर्ण है, इसके साथ ही भोजन, आवास एवं अध्ययनादि की व्यवस्था भी अति उत्तम है, आर्यजन इसका लाभ उठाकर अपनी संतानों को शिक्षित, सक्षम, संस्कारवान एवं चरित्रवान, राष्ट्रभक्त बनाकर व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करें।

बालक ब्रह्मचर्य व्रत धारें, धर्म कर्म भरपूर करें।
ब्रह्म-विवेक-प्रकाश पसारें, मोह महातम दूर करें।
युक्ति प्रमाण तर्क पटुता से, भ्रम को चकनाचूर करें।
पन्थ न पकड़े मतवालों के, साधु स्वभाव न क्रूर करें।
सरल सुलक्षण संतानों को, संयमशील सुजान करो।
गुरूकुल पूजो वैदिक वीरों, विद्या बल धन दान करो।

आचार्य स्वदेश
कुलाधिपति
चलभाष-9456811519

आचार्य हरिप्रकाश
प्राचार्य
9457333425, 9837643

स्वास्थ्य चर्चा-

गाजर प्राकृतिक ब्लड बैंक है

आयुर्वेदिक मत– मधुर तिक्त रस-लघु तीक्ष्ण स्निग्ध, गुण उष्ण वीर्य एवं मधुर विपाक होती है। यह त्रिदोषशामक है। यह दीपन संग्राही वृस्य ग्रहण होती है, रक्त पित्त संग्रहणी में लाभ करती है।

आधुनिक मत– इसके मूल में कैरोटिन हाईड्रोकैरोटिन शर्करा स्टार्च पैक्टिन मौलिक एसिड, लिगनिन, अलब्युमिन लवण तथा एक उड़नशील तेल पाया जाता है। इसमें आयरन पर्याप्त मात्रा में होता है। गाजर रस से अनेकों लवण और विटामिन ए बी सी डी ई व जी मिलते है।

गाजर के सेवन से-

1. शरीर मुलायम और सुन्दर बनता है
2. शरीर की त्वचा एवं नेत्र स्वथ्य बने रहते है।
3. इसके नियमित सेवन से नेत्र ज्योति बढ़ती है।
4. मानसिक शारीरिक तथा स्नायु शक्ति प्राप्त होती है।
5. बौद्धिक विकास के लिए गाजर लाभदायक है।
6. रोगों के आक्रमण से व्यक्ति सुरक्षित रहता है।
7. शरीर में शक्ति का संचार होता है।
8. गाजर का सेवन सौन्दर्य बढ़ाता है।
9. गहरी नींद आती है पौरूष कमजोरी दूर होती है।
10. गाजर पेट कब्ज को दूर करती है।

हरिश्चन्द्र आर्य,
प्रचार कार्यालय, अमरोहा

वैदिक सन्ध्या के मनसा परिक्रमा के मंत्रों का पद्यानुवाद

द्वितीय मंत्र का पद्यानुवाद

इन्द्र सुरपति

ओम् दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नमः इषुभ्यो नमः एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।

जिस ओर तुम्हारे ओम चरण हो हो वहीं हमारा भी विचरण।
मैं करूँ अनुगमन मन ही मन सब ओर तुम्हें कर ओम नमन।
दक्षिण के इन्द्र देव अधिपति
दांये प्रिय पितर उन्हीं की कृति
वचन वाण अज्ञान मिटायें
वे अधर्म की मेंट वक्र गति।
ऐश्वर्यवान हे इन्द्र नमन, करें मित्र सब इन्द्र अनुकरण।
मैं करूं अनुगमन मन ही मन सब ओर तुम्हें कर ओम् नमन।
परमेश ओम् को नमस्कार
प्रिय इन्द्र सुपति को नमस्कार
जो अधर्म से रक्षा करते
उन पितृ वचन को नमस्कार।
निज वक्र चाल के कृमि कण ये कीट पतंग भेंट विषगण।
मैं करूँ अनुगमन मन ही मन सब ओर तुम्हें कर ओम् नमन।।
यदि कोई द्वेष करे हमसे
या हम ही द्वेष करे उससे
हर द्वेष छोड़ प्रभु न्याय नियम
हम सहज स्नेह बर्ते सबसे।
कुटिल भ्रष्ट कटु मार्ग अपावन, तज कर कुकर्म हो सदाचरण।
मैं करूँ अनुगमन मन ही मन सब ओर तुम्हें कर ओम् नमन।।

-देव नारायण भाद्वाज'देवातिथि'

60वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज, सरदार पटेल मार्ग, खलासी लाइन, सहारनपुर का 60वां वार्षिकोत्सव दिनांक 28 से 30 अप्रैल 14 तक सोल्लास मनाया जायेगा। उत्सव में आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक होशंगाबाद, पं० भानुप्रकाश भजनोपदेशक बरेली, श्रीमती सुदेश आर्य भजनोपदेशिका नई दिल्ली, श्री आजाद सिंह लहरी, भजनोपदेशक सहारनपुर के भजन व उपदेश होंगे।

नित्य प्रातः 7 से 10 बजे तक संध्या हवन व आध्यात्मिक प्रवचन अपरान्ह 3 से 5:30 बजे तक भजन व प्रवचन रात्रि 8 से 11 बजे तक भजन व प्रवचन का कार्यक्रम चलेगा।

38वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज पिलखुवा (हापुड़) का 38वां वार्षिकोत्सव 26 अप्रैल से 29 अप्रैल तक सोल्लास मनाया जायेगा। दिनांक 26 अप्रैल को मध्यान्ह 2 बजे से शोभायात्रा निकाली जायेगी। 27 से 29 अप्रैल तक नित्य प्रातः 7 से 10 बजे तक यज्ञ भजन, प्रवचन, मध्यान्ह 3 से 5 बजे तक भजन प्रवचन, रात्रि 7:30 से 10:30 बजे तक भजन एवं वेदोपदेश होंगे। उत्सव में आमंत्रित विद्वान स्वामी धर्मेश्वरानन्द, डा० धीरज कुमार आर्य, गौरव कुमार शास्त्री पिलखुआ हैं।

मंत्रा गीत-

प्रभुवर प्रत्यक्ष

जो रहते देव प्रजा बनकर
उनके प्रत्यक्ष रहें प्रभुवर।।
क्यों यत्र तत्र तुम तकते हो
क्यों नहीं सूर्य को लखते हो
दिनकर देवत्व प्रदाता है
आचरण सृजन कर सकते हो
लेते प्रखर प्रेरणा उठकर
उनके प्रत्यक्ष रहें प्रभुवर
जो मननशील हो जाते हैं
देवत्व सहज अपनाते हैं
आसुरी वृत्तियां त्याग वही
परमेश-पुत्र पद पाते हैं
मनु बोध कराते हैं हितकर
उनके प्रत्यक्ष रहें प्रभुवर।।
प्रत्यक्ष सूर्य आभा अनुपम
दिखलाता प्रभु महिमा उत्तम
प्रभु रवि की छवि छा जाने से
उद्गारों का होता उद्गम।
यह धन्य देश ईश दर्पण दिनकर
उनके प्रत्यक्ष रहें प्रभुवर।।

स्रोत्रा- प्रत्यङ् देवानां विशः प्रत्यङ्ङुदेषि मानुषान्।
प्रत्यङ् विश्वं स्वदृशे।। ऋ. 1 . 50 . 5।।

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफसेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।